।। सुरगुण निरगुण को अंग ।।

मारवाडी + हिन्दी

*

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सुरगुण निरगुण को अंग लिखंते ||

|| साखी ||

सुरगुण निर्गुण सब करे || भेद न जाणे कोय ||
सुरगुण मे सुखराम के || नकला पूजे लोय || १ ||

सभी लोग उपासना करते है । उसमें कितने ही सगुण की(साकार की)और कितने ही निर्गुण की(निराकार की)उपासना करते । ये सभी अस्सल सगुण और निर्गुण का भेद जानते नही व नकल सगुण व निर्गुण को पुजते । || १ ||

सुरगुण न्यारी रे गई || निरगुण लखे न आय ||
सुरगुण की सुखराम के || नकला पूजे लाय || २ ||

जगत के लोक जीसे सर्गुण समजते है उससे अस्सल सर्गुण न्यारी है । ये जगतके लोक अस्सल सर्गुण पुजते नही,नक्कल सर्गुण पुजते है । ये जगत के लोक अस्सल सर्गुण भी जानते नही व अस्सल निर्गुण भी जानते नही ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । || २ ||

सुरगुण मेंई समजे नही || ओ जुग सब सेंसार ||
नकलाँ करी सुखराम जी || पूजे सबे गिवांर || ३ ||

सगुण की भक्ती करनेवाले संसार के सभी लोग अस्सल सगुण नही जानते । ये लोग देवताओ की मूर्ती बनाकर पूजते है । ऐसा करनेवाले सभी गँवार है । || ३ ||

सुण ज्यो रे सेंसार सो || समजो ग्यान बिचार ||
सुरगुण की गम किजीये || के सुखदेव ऊर धार || ४ ||

संसार के सभी लोक सुनो । मै बताता हूँ इस सगुण ज्ञान बिचार को समझो,उसकी पहचान करो व समजके हृदय में धारण करो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । || ४ ||

पाहण तो जड़ थूळ हे || ओ सुण सुरगुण नाय ||
सो सुरगुण सुखराम के || चित मन बोले माय || ५ ||

पत्थर की मूर्ती तो जड़ स्थूल है । यह कोई सगुण नही है । सगुण तो वे हैं जिसमे चित्त और मन है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । || ५ ||

नकल बणावे थूळ की || केहे करता अे होय ||
दोना सूं सुखराम के || न्यारी रेगी लोय || ६ ||

तुम पत्थर की मूर्ती बनाकर कहते कि यही परमेश्वर कर्ता हैं । तो यह पत्थर की मूर्ती सगुण भी नही और निर्गुण भी नही है । मूर्ती की पूजा करनेवाले सगुण और निर्गुण इन दोनो ही भक्ती से दूर अलग है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । । || ६ ||

सुरगुण पाँचू आतमा || निरगुण सबद बिचार ||

के सुखदेव नर समज रे || आ सेवा ऊरधार || ७ ||

सगुण तो पंचभूती आत्मा है और सतशब्द यह निर्गुण है । पंचभूती आत्मा याने सतगुरू के देह की भक्ती करना यह सगुण भक्ती है व पंचभूती आत्मा मे याने सतगुरू के देह मे जो निर्गुण शब्द बोलता है उसकी भक्ती करना निर्गुण की भक्ती है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,की इसप्रकारसे ये सरगुण व निरगुण ये दोनो भक्ती समझकर हृदय मे धारण करो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । || ७ ||

सुरगुण माता जाणीये || निरगुण पिता होय ||
के सुखदेव अे अेकठा || न्यारा सुण्या न कोय || ८ ||

सगुण भक्ती इच्छामाता की याने माया की व निर्गुण भक्ती पिता ब्रम्ह की समजो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि जैसे मां–बाप एक ही है । वैसे ही माया ब्रम्ह भी एक ही है । इस मां बाप को याने माया ब्रम्ह को भी अलग सुना नही है । || ८ ||

जड़ पुजे सुरगुण कहे || सो बेक्या जुग माय ||
राहा नगर सुखराम के || तज ऊबट नर जाय || ९ ||

जड पूजा याने मूर्ती की पूजा करके हम सगुण भक्ती करते ऐसा कहते है । वे इस संसार मे बहके हुए है । वे नगर का रास्ता छोड़ उजड याने टेढ़े मेढ़े रास्ते से जाते है वैसे है । || ९ ||

ऊर मे सुरगुण सेव हे || निरगुण सबद स्वरूप ||
या सांभळ सुखराम के || पूजो सुरगुण रूप || १० ||

हृदय मे ही सगुण सेवा है और शब्द यह निर्गुण स्वरूपी है । यह सुनकर सगुण रूप की पूजा करो । || १० ||

पिंडत ग्यानी सांभळो || आ सेवा सत होय ||
सुरगुण निरगुण अेकठी || के सुखदेवजी तोय || ११ ||

पंडित और ज्ञानी सभी यह सुनो । यह मैं जो कहता हूँ । वह सेवा सच्ची है । सगुण और निर्गुण ये दोनो एक ही जगह है ऐसा आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है ।|| ११ ||

सुरगुण पूजो आतमा || ज्याँ मे सिरजन हार ||
पाहण तो सुखराम के || हे सो थूळ बिचार || १२ ||

सतगुरु के आत्मा की पूजा करना ही सगुण पूजा है । इसी आत्मा मे याने संत मे परमात्मा रहता है उस परमात्मा वाली आत्मा की यानी संत की पूजा करो । पत्थर की मूर्ति स्थूल याने जड है । उसमे परमात्मा नही रहता यह विचार करके देख लो । || १२ ||

सुरगुण निर्गुण एक हे || जे जाणे कोई भेव ||
सुरगुण कर सुखराम के || पावे निरगुण देव || १३ ||

सगुण और निर्गुण एक ही है इसलिये सर्गुण याने संतो के पास से निर्गुण देव मिलेंगे । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।। १३ ।।

सुरगुण सेवा सो सही ।। बोलर दे आ सीस ।।
पूज्याँ बोल न जाब दे ।। सो जड़ बिस्वाबीस ।। १४ ।।

जो संत बोलते है व आशिर्वाद देते है और ज्ञान बताते है ऐसे संतो की सेवा करनी ही सगुण सेवा है । जिस मूर्ती की पूजा करते है वह मूर्ती बोलकर जबाब नही देती वह मूर्ती बिस्वा बीस याने सोलह आने जड है । ।। १४ ।।

राम केहे मुज माँय हे ।। पूजन जड़ कूं जाय ।।
के सुखदेव ग्यानी सुणो ।। न्याव करीजे आय ।। १५ ।।

सभी लोग मुझमे राम है,ऐसा कहते है और ऐसा कहने वाले पत्थर की मूर्ती पूजने को जाते है तो सभी ज्ञानीयो सुनो और इसका न्याय करो कि आत्मा यह परमात्मा है याने आत्मा मे परमात्मा है तो पत्थर की मूर्ती की पूजा क्यो करते हो ? ।। १५ ।।

तो में तेरा राम हे ।। तो जड़ पूज्यो काँय ।।
के युँ को सुखराम के ।। हर नही हे हम माय ।। १६ ।।

तुझमें ही तुम्हारा राम है तो पत्थर की मूर्ती की पूजा क्यों करते हो । नही तो ऐसा कहो कि मुझमे राम नही है । ।। १६ ।।

जे हर तुमरे मांय हे ।। में बूजत हूँ आय ।।
जड़ आगे सुखराम के ।। काँय निवावो जाय ।। १७ ।।

यदी तुममे राम है तो मै पूछता हूँ कि तूममे राम होते हुए भी,जड मूर्ती के आगे सिर क्यो झुकाते हो ? ।। १७ ।।

केंता त्तो तुम यूँ कहो ।। नर नारायण देहे ।।
पूजे जड़ सुखराम क्हे ।। पत्थर सिर पर लेहे ।। १८ ।।

तुम तो ऐसा कहते हो,कि नर नारायणका देह है । याने नर जो है वह नारायणका देह है । फिर ऐसा कहनेवाले सरके उपर पत्थरको,मूर्तीको क्यों लेते है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।। १८ ।।

तुम ठाकुर कर थापीयो ।। अेक तत्त कूं कुवाय ।।
तत पांचूँ सुखराम के ।। ता की गम न काय ।। १९ ।।

तुमने जिसे ठाकूरजी करके स्थापीत किया है वह सिर्फ एक तत्व याने जड पृथ्वी तत्व का है परन्तु पाँचो तत्व के बने हुए संत है उनकी तुम्हे जानकरी ही नही है । ।। १९ ।।

पांचा मे साहेब बसे ।। केहे सुर नर सब लोय ।।
तत अेके सुखराम के ।। किणी बतायो तोय ।। २० ।।

पंचायत परमेश्वर है ऐसा देव और मनुष्य सभी कहते है फिर एक तत्व जड याने पृथ्वी

तत्व,पत्थर की पूजा करना,यह तुम्हे किसने बताया ? ।। २० ।।

में बूजूं तुम पिंडता ।। क्यूँ भरमाई लोय ।।
साहिब सो सुखराम के ।। कोहो किण जागां होय ।। २१ ।।

अरे पंडित,मै तुमसे पूछता हूँ इन सभी लोगों को तुमने क्यों बहका दिया?साहेब तुम मुझे किस जगह पर है यह बताओ ? ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।२१।।

जे साहिब सब में बसे ।। तो सोजो ऊर मांय ।।
के सुखदेव बारे दुनी ।। क्यूँ भटकावो जाय ।। २२ ।।

यदी सतस्वरुप ब्रम्ह याने साहेब सर्व व्यापक है तो वह सभी मे बसता है उसे तुम अपने हृदय मे ही खोजो । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज पंडीतोको कहते है कि तुम इस संसार के लोगो को बाहर क्यो भटकने देते हो । ।। २२ ।।

पेट भरण के कारणे ।। भरम उठायो कांय ।।
साहिब तो सुखराम के ।। हे सब ही के मांय ।। २३ ।।

आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज पंडित को कहते है कि तुम तुम्हारा पेट भरने के लिए,इस संसार के लोगों के मनमे भ्रम उठाकर मतलब बाहर मूर्ति की पूजा करने को क्यों बताया? सतस्वरुप साहेब तो सर्वव्यापी है और सभी के अन्दर है फिर लोगोको बाहर मूर्ति की पूजा करने मे क्यों बहकाया?।। २३ ।।

हर का किया देव अे ।। प्रगट पांचूँ जोय ।।
तन देवल सुखराम के ।। राम बणाया सोय ।। २४ ।।

हरी ने बनाया हुआ देहरुपी देव यह पाँच तत्व(आकाश,वायु,अग्नी,जल,पृथ्वी)का प्रगट दिखाई देता है । उस पाँचो तत्व से बना हुआ देवल याने देह उस राम का ही बनाया हुआ है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।२४ ।।

राम बणाया देवरां ।। तां मे मेल्या देव ।।
सुणज्यो सब सुखराम के ।। याँ की करलो सेव ।। २५ ।।

राम का बनाया हुआ देहरुपी देवालय है उसमे आत्मा यह देव है तो सभी लोग सुनो व आत्मा की सेवा करो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।। २५ ।।

मन का कीया देवरा ।। मन ही थाप्यो देव ।।
बिण समज्या सुखराम के ।। भोळा करसी सेव ।। २६ ।।

तुम तुम्हारे मन से पत्थर,मिट्टी,चूना,लकडी देऊल का बनाया और मन से ही इस देवल में पत्थरों के देव की स्थापना की । परन्तु इसमें जो समझते नही और जो भोले है वेही इस मूर्ति की सेवा करते है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।। २६ ।।

सांई देवळ मांडीयो ।। अजब अनोपम आय ।।
तामे सुण सुखराम के ।। तीन लोक सब मांय ।। २७ ।।

उस मालिक ने देहरुपी देवल उत्पन्न किया । उसे अजब व अनुपम बनाया । इस शरीर मे ही तीनों लोक बनाये । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है । ।। २७ ।।

मन का किया देवरा ।। ओ मन पूजे जोय ।।
तब लग सुण सुखराम के ।। हर सूं बे मुख होय ।। २८ ।।

मन के बनाये हुए चूना,मिट्टी,पत्थर,लकडी के देवल मे उनका मन ही पूजने जाता है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है कि वे सच्चे देव रामजी से विमुख है ।।।२८।।

हर का कीया देवरा ।। तीन मे सब ही देव ।।
हर वाँही सुखराम के ।। करल्यो वॉकी सेव ।। २९ ।।

हरी का बनाये हुअे,देहरुपी देवल मे सभी देव और हर भी है ऐसे संत की सेवा करो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।। २९ ।।

क्हा कहूँ मन गिंवार कूँ ।। समजे नही लगार ।।
के सुखदेव ईण झूट संग ।। क्यूं ऊतरे गो पार ।। ३० ।।

यह मन गवाँर है इस मन को क्या कहू ?कहा हुआ बिल्कुल ही समझता नही है । इस झूठी मूर्ती पूजा के संग से,पार कैसे उतरेगा ? ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।३०।।

सुरगुण काया आपकी ।। निरगुण सिंवरण सार ।।
अे भक्ति सुखराम के ।। दोनू संग बिचार ।। ३१ ।।

सगुण यह अपनी काया है और जिस सतशब्द का स्मरण करते हो वही शब्द निर्गुण है । आदि सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि ये दोनो साकार और निराकार की भक्ति अपने साथ ही है । ।। ३१ ।।

प्रम मोख जब पावसी ।। हर नित सिंवर्‍याँ जोय ।।
निरगुण संग सुखराम के ।। सुरगुण भेळी होय ।। ३२ ।।

जब नित्य हरी का स्मरण करोगे तभी परम मोक्ष तुम्हे मिलेगा । संत के सगुण के देह से निर्गुण शब्द समजकर निर्गुण शब्द का स्मरण करोगे तभी परममोक्ष होगा । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।३२।।

सुरगुण सुण ममंकार हे ।। निरगुण अेहे पिछाण ।।
ररंकार सुखराम के ।। मुख बिन बोले बाण ।। ३३ ।।

रा'व म' इन दो अक्षरों मे से म अक्षर यह सगुण है,यह ममंकार माया है और निर्गुण जो ररंकार शब्द मुख के बिना और जीव्हाके बिना रोम रोम से बोला जाता है वह निर्गुण है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३३ ।।

जब लग सुरगुण सेव हे ।। मुख सूं सिंवरे कोय ।।
निरगुण तो सुखराम के ।। बिन रसणा सूं होय ।। ३४ ।।

जब तक मुँह से स्मरण होता है याने नाम का उच्चारण होता है तब तक सगुण भक्ती है और जीभ के बिना स्मरण होता है वह निर्गुण भक्ती है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।। ३४ ।।

सुरगुण सेवा आ सही ।। मुख सूं सिंवरे राम ।।
रट रटणा सुखराम के ।। पूंछे निर्गुण धाम ।। ३५ ।।

जो मुख से रामनाम का सुमिरन करते है वह सगुण सेवा है । इस सगुण सेवा से याने राम नाम की रटन करनेसे ही निर्गुण धाम को पहुँचते आता है । रामनाम की रटन किए बिना निर्गुण धाम को कोई भी नही पहुँचता । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३५ ।।

सुरगुण निरगुण एक हे ।। सुण ज्यो ईण बिध होय ।।
ओ यो संग सुखराम के ।। मन माना कूं जोय ।। ३६ ।।

सगुण और निर्गुण ये दोनो एक ही है । यह बिधी सभी जन सुन लो । सगुण और निर्गुण ये दोनो एक कैसे है । यह मन को ज्ञान देकर देख लो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।। ३६ ।।

बाहीर पूजे देवरा ।। आ सुरगुण नही होय ।।
भरम्योड़ा सुखराम के ।। नकल बणाई जोय ।। ३७ ।।

बाहर के जो देवल(मूर्ती)पूजते है यह कोई सगुण भक्ती नही है । यह भ्रमित हुए लोगो ने नकल(मूर्ती)बनायी है और उसे पुजते है । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।३७।

प्रगट हेला देत हूँ ।। सुणज्यो सब नर आय ।।
भक्ति तो सुखराम के ।। हे दोनू तन मांय ।। ३८ ।।

यह मै प्रगट हाँक लगाकर कह रहा हूँ तो सभी लोक आकर सुनो । आदि सतगुरू सुखराम जी महाराज कहते है कि सर्गुण व निर्गुण ये दोनो भी भक्ती तो अपने देह मे ही है ।। ३८ ।।

।। इति सुरगुण निरगुण को अंग संपूरण ।।